वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 201 | रविवार 19 नवम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

सामूहिक विवाह में देशी और विदेशी जोड़ों ने रचाई शादी

21 से ज्यादा जोड़ों का हुआ सहज विवाह, 2000 से ज्यादा लोगों का मिला वैवाहिक जोड़ों को आशीर्वाद

जयपुर. कासं

शहर में एक मंच पर देशी और विदेशी ने अपने लिए जीवन साथ का चुनाव किया और शादी के बंधन में बंधे । दूल्हा और दुल्हन बने युगल जोडे को एक साथ हजारों लोगों का आशीर्वाद मिला। ये नजारा देखने को मिला शनिवार की शाम वीटी रोड पर। श्री माताजी निर्मला देवी ट्रस्ट की ओर से आयोजित दीपावली महालक्ष्मी पूजा समारोह में देश के साथ-साथ विदेश से भी लोग एक साथ एक मंच पर जुड़े और आपस में सांस्कृतिक आदान -प्रदान किया । तीन दिवसीय आयोजन में जहाँ ध्यान साधना पर आधारित वर्कशॉप में लोग शामिल हुए वही दूसरी तरफ शाम को बैंड बाजा के साथ खुशियों की बारात में लोग शामिल होते दिखे। इस दीपावली महालक्ष्मी पूजा समारोह की किसी भव्य समारोह से कम नहीं थी क्योंकि यहाँ एक साथ 21 जोड़ो की शादी हुई । 21 जोड़ों ने सामूहिक विवाह के अन्तर्गत अपना जीवन भर के लिए विवाह बंधन में बांध गए। इन वैवाहिक जोड़ों में न सिर्फ भारतीय जोड़ा शामिल रहा बल्कि विदेशी जोड़ों ने भी भारतीय परम्परा के अनुसार शादी रचाई। देशी और विदेशी मेहमानों ने इन जोड़ों को आशीर्वाद और प्यार दिया। कार्यक्रम बहुत हर्ष और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। समारोह में 2000 से ज्यादा लोग इस सामूहिक कार्यक्रम में शामिल हुए। इस 3 दिवसीय कार्यक्रम में, पूर्णतया भारतीय परंपरा के साथ हल्दी, मेहंदी और पाणिग्रहण संस्कार की रस्म अदाई हुई । यह कार्यक्रम जयपुर में 9वीं बार आयोजित किया जा रहा है।

नेट थिएट पर दादू वाणी ने बटोरी खूब सुर्खियां

गायक दिलीप बोहरा ने सुनाया कोई पीवे राम रस प्यासा रणक भंवर वाला

जयपुर. कासं। नेट थिएट कार्यक्रमों की श्रृंखला में गायक दिलीप बोहरा ने अपनी वाणी से दादू वाणी के गीत और भजन प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। नेट थिएट के राजेंद्र शर्मा राजू ने बताया कि गायक दिलीप बोहरा ने दादू पक्ति के दादू दयाल के 52 शिष्यों की ओर से रचित दादू वाणी के गीत और भजन प्रस्तुत कर माहौल को दादूमय बनाया। उन्होंने कार्यक्रम की शुरूआत जयपुर स्थापना दिवस के अवसर पर सर्वप्रथम गजानंद की रचना गणराज गजानंद रणक भंवर वाला से की। इसके बाद उन्होंने दादू दयाल के भक्तसुंदर दास का लिखा एक गीत है कोई पीवे राम रस प्यासा गगन मंडल में अमृत बरसे से दर्शकों को भाव विभोर किया। इसके बाद उन्होंने जरा राम भजन कर लीजे साहब लेखा मांगेगा रे और अंत में सतगुरु चरणा मस्तक धरना सुनाकर कर दशको से खूब तालियां बटोरी। इनके साथ तबले पर नवल डांगी ने सभी और असरदार संगतकर इस संध्या को सुरमई बना दिया। कार्यक्रम संयोजक नवल डांगी कैमरा और लाइट्स मनोज स्वामी, मंच व्यवस्था अंकित शर्मा नोनू और जीवितेश शर्मा की रही।

जयपुर स्थापना दिवस पर बच्चों ने केक काटकर मनाया जश्न

फोटो प्रदर्शनी में जयपुर की तस्वीरें देखकर जयपुराइट्स सहित स्कूली बच्चे हुए उत्साहित

जयपुर. कासं

जयपुर स्थापना दिवस के उपलक्ष में राजस्थान फोटो फेस्टिवल के तहत होटल आईटीसी राजपूताना में जयपुर हेरिटेज फोटो एग्जीबिशन का आयोजन हो रहा है। इस दौरान जयपुर के 296 वें स्थापन दिवस के अवसर पर स्कूली बच्चों की ओर से हवामहल पर बना हुआ केक काटा गया। स्कूली बच्चों के साथ जीएम दीपेंद्र राणा, सत्येंद्र सिंह ,बबलू हेमराना भी मौजूद रहे। जीएम ने बच्चो से जयपुर से जुड़े कई सवाल किए और बच्चो ने उनके जवाब भी दिए। बच्चों को जयपुर की कई जानकारियां भी दी। बीजेपी के युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अंकित चेची ने भी एग्जीबिशन को विजिट किया। गौरतलब है कि एग्जीबिशन का आयोजन होटल की वेलकम आर्ट गैलरी में 20 नवम्बर तक होगा। कार्यक्रम की संरक्षक रेणुका कुमावत ने बताया कि जयपुर के 296 वर्ष पर सभी बच्चों के साथ केक कटकर सेलिब्रेट किया गया। इस प्रदर्शनी के माध्यम से जयपुर के पुराने और नए रूप को नए तरीके से प्रदर्शित किया जा रहा है। जिसके चलते जयपुराईट्स में काफी उत्साह है। इससे पर्यटन को अधिक बढ़ावा मिलेगा और फोटोग्राफी में सब के लिए नए अवसर लाएगा। उन्होंने आगे बताया कि जयपुर स्थापना दिवस पर जयपुर के कल्चर को सभी तक पहुंचाना और दिखाना बहुत जरूरी है। जयपुर विरासत देश-विदेश में काफी जानी जाती है। इसलिए आज के यूथ और आम लोगों तक जयपुर की खूबसूरत सुंदर तस्वीरों के जरिए दिखाया जाए और जयपुर के टूरिज्म को प्रमोट किया जाए। इस एग्जीबिशन में सभी के लिए एंट्री निःशुल्क है।

केदारनाथ अग्रवाल बीकानेर वाला: नमकीन शख्सियत... मीठा इतिहास!

जिक्र जब भी होगा जायके की दुनिया का...याद बहुत काकाजी आएंगें! राजधानी को दिए मारवाड़ी स्वाद के चटखारे!

शाबाश इंडिया

बीकानेरवाला बीकानो परिवार के वटवृक्ष काका केदारनाथ अग्रवाल तेरह नवम्बर तेईस को दुनिया को अलविदा कह गए। भारतीय सांझी सामूहिक परिवार परम्परा निर्वाह की वे मिसाल थे। यह सामूहिकता की प्यार भरी शक्ति का ही कमाल था कि दिल्ली में उनका सांझा परिवार एक मिसाल बना है। साधारण सांझी हलवाई आजीविका को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की बुलंदी तक पहुंचाने वालों में काका केदारनाथ, पत्नी नौरती देवी की भूमिका युगप्रवर्तक की सी रही। पिता लालचंद, मां बसंती देवी के छह बेटों में सबसे छोटे पुत्र केदारनाथ के निधन की खबर को राष्ट्रीय स्तर के अखबारों में प्रमुखता मिलने के पीछे यह सामूहिकता व स्वाद की दुनिया की अपनी विशिष्टता है। यह स्वाद बीकानेरी मिजाज का था, जिसकी शुरूआत धरती धोरां के हलवाई परिवार ने पुरानी दिल्ली चांदनी चौक से की। मोठ दाल से तेल में बना नमकीन भुजिया, गाय के दूध से बना स्पंजी रसगुल्ले का स्वाद जब दिल्ली वालों की जुबां पर उतरा तो उतरता ही चला गया और आज विश्व में अपनी पहचान बनाए है। मजेदार बात कि इससे पूर्व दिल्ली वाले तेल में बने स्नैक्स से अपरिचित थे। सबसे पहले काजू कतली बनाने की शुरूआत भी इसी परिवार से हुई। **बीकानेर से दिल्ली का सफर:** भाई सत्यनारायण की उंगली थामे केदारनाथ बीकानेर से तब राजधानी पहुंचे जब देश को आजादी मिले कुछ अरसा ही बीता था। यहां चांदनी चौक की गलियों में बाल्टी, परात में रसगुल्ले, भुजिया सजाए गए, जो बीकानेर से रेलगाड़ी द्वारा दिल्ली पहुंचाए जाते। केदारनाथ के भतीजे मोतीलाल अग्रवाल कहते हैं कि काकाजी के निधन के संग ही एक युग, एक पीढ़ी का पटाक्षेप हुआ। पिता जुगलकिशोर सबसे बड़े और वे सबसे छोटे थे। काकाजी की विरासत को संभाले हैं चंदुभाई, श्यामसुंदर, मुन्ना भाई, नंद किशोर, चेतन, राधेमोहन, नवरतन, जवाहर, मनाड,बाबूभाई सहित डेढ़ सौ जन का बीकानेरवाला परिवार। निस्संदेह सफलता की थुरी में महिलाओं का संघर्ष और प्यार भी अद्भुत है! **-साधना सोलंकी**

BAKLIWAL PAINT STORE

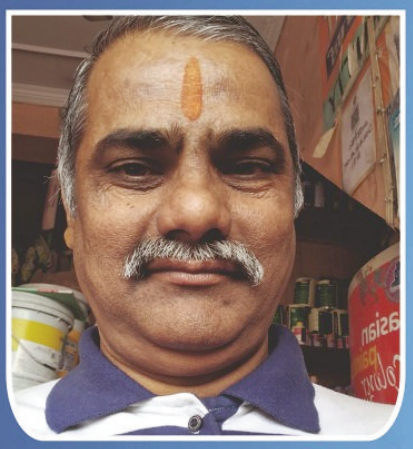

Authorised Dealer : ASIAN PAINTS LTD.

राजेन्द्र बाकलीवाल
9785395898

एडवोकेट प्रतीक जैन
9413841906

Diggi Malputa Road, Sanganer- Jaipur

समझ लीजिए हार्ट अटैक से कैसे बचाव हो

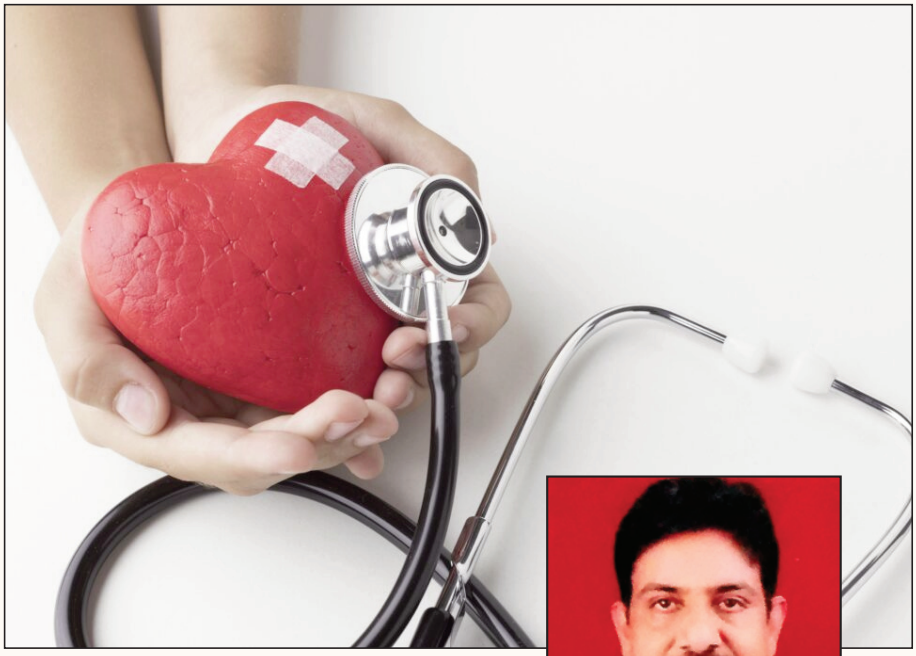

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा,जयपुर।
9828011871

भारत में 3000 साल पहले एक बहुत बड़े ऋषि हुये थे। नाम था महाऋषि वागवट जी उन्होंने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है, अष्टांग हृदयम Astang hrudayam इस पुस्तक में उन्होंने बीमारियों को ठीक करने के लिए 7000 सूत्र लिखें थे।यह उनमें से ही एक सूत्र है। वागवट जी लिखते हैं कि कभी भी हृदय को घात हो रहा है मतलब दिल की नलियों मे blockage होना शुरू हो रहा है तो इसका मतलब है कि रक्त blood में acidity अम्लता बढ़ी हुई है अम्लता आप समझते हैंजिसको अँग्रेजी में कहते हैं acidity अम्लता दो तरह की होती है एक होती है पेट की अम्लता और एक होती है रक्त blood की अम्लता आपके पेट में अम्लता जब बढ़ती है तो आप कहेंगे पेट में जलन सी हो रही है, खट्टी खट्टी डकार आ रही हैं , मुंह से पानी निकल रहा है और अगर ये अम्लता acidity और बढ़ जाये तो hyperacidity होगी और यही पेट की अम्लता बढ़ते-बढ़ते जब रक्त में आती है तो रक्त अम्लता blood acidity होती है और जब blood में acidity बढ़ती है तो ये अम्लीय रक्त blood दिल की नलियों में से निकल नहीं पाती और नलियों में blockage कर देता है तभी heart attack होता है इसके बिना heart attack नहीं होता और ये आयुर्वेद का सबसे बढ़ा सच है जिसको कोई डाक्टर आपको बताता नहीं क्योंकि इसका इलाज सबसे सरल है ! इलाज क्या है ? वागवट जी लिखते हैं कि जब रक्त (blood) में अम्लता (acidity) बढ़ गई है तो आप ऐसी चीजों का उपयोग करो जो क्षारीय हैं आप जानते हैं दो तरह की चीजें होती हैं अम्लीय और क्षारीय, acidic and alkaline अब अम्ल और क्षार को मिला दो तो क्या होता है ? acid and alkaline को मिला दो तो क्या होता है? neutral होता है सब जानते हैं तो वागवट जी लिखते हैं कि रक्त की अम्लता बढ़ी हुई है तो क्षारीय (alkaline) चीजें खाओ, तो रक्त की अम्लता (acidity) neutral हो जाएगी, और रक्त में अम्लता neutral हो गई, तो heart attack की जिंदगी मे कभी संभावना ही नहीं ! ये है सारी कहानी ! अब आप पूछेंगे कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जो क्षारीय हैं और हम खायें ?आपके रसोई घर में ऐसी बहुत सी चीजें है जो क्षारीय हैं जिन्हें आप खायें तो कभी heart attack आसानी से न आए और अगर आ गया है तो दुबारा न आए ,यह हम सब जानते हैं कि सबसे ज्यादा क्षारीय चीज क्या हैं और सब घर मे आसानी से उपलब्ध रहती हैं, तो वह है लौकी जिसे दुधी भी कहते हैं English में इसे कहते हैं bottle gourd जिसे आप सब्जी के रूप में खाते हैं ! इससे ज्यादा कोई क्षारीय चीज ही नहीं है ! तो आप रोज लौकी का रस निकाल-निकाल कर पियो या कच्ची लौकी खायो वागवट जी कहते हैं रक्त की अम्लता कम करने की सबसे ज्यादा ताकत लौकी में ही है तो आप लौकी के रस का सेवन करें, कितना सेवन करें? रोज 200 से 300 मिलीग्राम पियो कब पिये? सुबह खाली पेट (toilet जाने के बाद) पी सकते हैं या नाश्ते के आधे घंटे के बाद पी सकते हैं ,इस लौकी के रस को आप और ज्यादा क्षारीय बना सकते हैं। इसमें 7 से 10 पत्ते तुलसी के डाल लो तुलसी बहुत क्षारीय है इसके साथ आप पुदीने के 7 से 10 पत्ते मिला सकते हैं पुदीना भी बहुत क्षारीय है इसके साथ आप काला नमक या सेंधा नमक जरूर डाले ये भी बहुत क्षारीय है लेकिन याद रखें नमक काला या सेंधा ही डाले वो दूसरा आयोडीन युक्त नमक कभी न डाले ये आयो डीन युक्त नमक अम्लीय है तो आप इस लौकी के जूस का सेवन जरूर करें 2 से 3 महीने की अवधि में आपकी सारी heart की blockage को ठीक करने में मदद करेगा, 21 वें दिन ही आपको बहुत ज्यादा असर दिखना शुरू हो जाएगा जल्दी से कोई आपरेशन की आपको जरूरत नहीं पड़ेगी ,घर में ही हमारे भारत के आयुर्वेद से इसका इलाज हो जाएगा और आपका अनमोल शरीर और लाखों रुपए आपरेशन के बच जाएँगे।आज आपने यह पूरी पोस्ट पढ़ी धन्यवाद।

कविता

करज्यों मतदान

युवाओं अबके करज्यों ऐसो मतदान,
जीसूं चुणौ थे सरकार महान,
देख लिज्यो अगला पिछला सारा,
जनप्रतिनिधि रा कर्मकांड,
युवाओं अबके करज्यों ऐसो मतदान,
देकर जनतंत्र रै मायै अपणी पूर्ण भागीदारी,
चुण लिज्यों थे भी एक जमीन सूं जुड़ो हूयों,
मानवता से ओत पोत जनता री सेवा
करवाडौ,एक नैतिकता सूं भरो हुयों भोळो,
इंसान,युवाओं अबके करज्यों ऐसो मतदान,
जीसूं चुणौ थे सरकार महान,
कपोल कल्पना रे झांसा में थे अबके,
मत आज्यो,खुला में करज्यों थे मतदान
तो देख लिज्यों अगला पिछला
सारा विकास रा फरमान,
जो थे करज्यों गुप्त मतदान तो
समझ लिज्यों पूरा लोकतंत्र रो ज्ञान,
जो थे करज्यों कान रा माय मतदान
तो जान लिज्यों योजना,परियोजना रो सारो ज्ञान,
युवाओं अबके करज्यों ऐसो मतदान,
अबके लालच में आकै थे दे दियो जो
अपणो बहुमूल्य मतदान तो आ जावेली
म्हारा भाईल्या संकट मैं थाकी ही जान,
दिया पाछे थे पछतावला फैरू पांच साल
रे माय गरीबी,बेरोजगारी,महंगाई,विकास री
धीमी गति रो बेसुरी बिगुल बजावला,
फैरू थाके सपना रो सौदा करवाल्या ही,
सौदागर थाने दर दर भटकावेल्यों,
युवाओं अबके करज्यों ऐसो मतदान,
जीसूं चुणौ थे सरकार महान।

डॉ.कांता मीना
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार

वेद ज्ञान

दुख का अंत

आज प्रत्येक व्यक्ति दुखी है। उसकी स्वाभाविक मुस्कुराहट कहीं गुम हो गई है। हर चेहरा उदास, गमगीन व चिंतित दिखलाई पड़ता है। वह हंसने का प्रयास तो करता है, लेकिन अस्वाभाविक हंसी उसकी पोल खोल देती है। अब हंसने का कोई कारण तो होना चाहिए। बेदिली की हंसी से उसे राहत नहीं मिलती। तभी तो मनुष्य के अंदर का दर्द कहीं न कहीं से बाहर छलक ही पड़ता है। ये दुख तकलीफ मनुष्य के जीवन में क्यों हैं। क्यों मनुष्य से ये नाता जोड़े रहते हैं? क्यों नहीं इनसे पीछा छूट पाता। सर्वप्रथम दुखों के मूल कारण को जानना होगा तत्पश्चात उनसे छूटने के उपायों पर विचार करना होगा। अविद्या से उत्पन्न अज्ञान ही मनुष्य के दुखों का मूल कारण है। इसी अविद्या रूपी अंधकार के कारण हम बार-बार इस जगत रूपी दुखालय में आकर फंस जाते हैं। हमें सत्य दिखलाई नहीं पड़ता। इस दृश्यमान जगत को ही सत्य मानकर उसको पकड़ लेने की चेष्टा करना ही दुखों के भंवर जाल में फंसने का कारण बन जाता है। सांसारिक चकाचौंध व भौतिकता के इस साम्राज्य में अपने निज स्वरूप को मनुष्य भुला बैठा है। आज दृश्यमान भौतिक जगत रूपी छाया रूपी माया को पकड़ लेने की होड़ सी मच गई है। याद रखें, हर चमकती चीज सोना नहीं होती। बाहरी चमक-दमक हमें इंद्रिय लोलुप बना रही है। आज ऐसी सोच स्थापित हो गई है कि किसी प्रकार से भी भौतिक साधन संपन्न बनकर इंद्रिय सुख का भरपूर भोग करने में सक्षम हो जाया जाए। इंद्रियों को किस प्रकार तृप्त किया जाए। बस इसी को प्रधानता दी गई है। भौतिक संसाधनों से इंद्रिय सुख प्राप्त कर लेने की यह लालसा जीव को दुखों के जाल में फंसा देती है। अब दुखों से छुटकारा पाने के लिए इस अविद्या रूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान के प्रकाश में रास्ता ढूंढ़ निकालना होगा। ज्ञान रूपी प्रकाश में हमें आगे बढ़ना होगा। सर्वप्रथम हमें मनुष्य जीवन क्यों प्राप्त हुआ है और इसकी सार्थकता पर विचार करना होगा। फिर यह विचार भी करना होगा कि यह प्राप्त मानव जीवन बहुत बहुमूल्य है। इसलिए इस सतत परिवर्तनशील विनाशी जगत को पकड़ लेने की अभिलाषा का पूर्ण रूप से त्याग करना होगा।

संपादकीय

सुरक्षित सफर सुनिश्चित करा पाना रेलवे के लिए कठिन काम

तमाम कोशिशों के बावजूद सुरक्षित सफर सुनिश्चित करा पाना रेलवे के लिए कठिन काम बना हुआ है। कभी कोई गाड़ी पटरी से उतर जाती है, तो कभी दो गाड़ियां आपस में टकरा जाती हैं। हालांकि दावा किया जाता है कि गाड़ियों में टक्कररोधी उपकरण लगाने और कंप्यूटरीकृत यातायात संचालन व्यवस्था होने के बाद से हादसों में कमी आई है। मगर बीते छह महीनों पर नजर डालें तो कई बड़े हादसे हो चुके हैं, जिनमें सैकड़ों लोगों की जान चली गई और सैकड़ों घायल हुए। अभी बारह घंटे के भीतर दो गाड़ियों में आग लगने की घटनाएं उसी सिलसिले में जुड़ गई हैं। बुधवार को एक तेज रफ्तार गाड़ी दिल्ली से दरभंगा के लिए रवाना हुई थी। उत्तर प्रदेश के इटावा पहुंचते ही उसके तीन डिब्बों में आग लग गई। गनीमत थी कि गाड़ी अभी स्टेशन से रवाना ही हुई थी और कर्मचारियों ने उसमें से धुआं उठता देखा और रुकवा लिया। इस तरह कोई बड़ा हादसा होने से बच गया। मगर वहीं दूसरी गाड़ी में आग लगने से उन्नीस लोग घायल हो गए। आग लगने की वजह से वे चलती गाड़ी से कूदने और भागने लगे थे। दूसरी गाड़ी भी दिल्ली से बिहार के वैशाली जा रही थी। रेल गाड़ियों में आग लगने की बड़ी वजह उनमें लगे खराब गुणवत्ता वाले तार और उन्हें जोड़ने आदि में बरती गई लापरवाही होती है। गरम होकर जब दो तार आपस में चिपक जाते हैं, तो चिनगारी फूटने लगती है। दोनों घटनाएं रात के वक्त हुईं, जब ज्यादातर मुसाफिर सो रहे थे। जब भी तारों के चिपक कर जल उठने की घटना होती है, तो उसकी आहट पूरे डिब्बे में आग के फैलने से पहले मिल जाती है। जाहिर है, इन दोनों घटनाओं के वक्त भी तारों के जलने की बदबू डिब्बे में फैली होगी। मगर समय रहते किसी तकनीकी सहयोगी ने उस पर काबू पाने की कोशिश नहीं की, इसलिए आग फैली। ज्यादा संभव है कि उन गाड़ियों में कोई तकनीकी सहयोगी रहा ही न हो।

आमतौर पर डिब्बों में जो सहायक तैनात किए जाते हैं, वही बिजली आदि से संबंधित गड़बड़ियों को सुधारने या सुधरवाने की जिम्मेदारी उठाते हैं। मगर जिन दोनों गाड़ियों में आग लगी, वे विशेष गाड़ियां थीं, जो छठ के मद्देनजर चलाई गई थीं। फिर उनके जिन डिब्बों में आग लगी वे सामान्य शयनयान थे। इसलिए जाहिर है, उनमें भीड़ भी कुछ अधिक रही होगी और उनमें सहायकों की तैनाती उस तरह नहीं की गई होगी, जैसे दूसरी गाड़ियों के विशेष वातानुकूलित डिब्बों में की जाती है। दरअसल, त्योहारों के मौकों पर विशेष गाड़ियां चला कर रेलवे यात्रियों के दबाव को कम करने की कोशिश तो करता है, मगर वह उनमें वैसी सेवाएं नहीं दे पाता जैसी दूसरी गाड़ियों में होती हैं। ऐसी गाड़ियों में लगे ज्यादातर डिब्बे प्रायः नियमित उपयोग के अतिरिक्त सुधार के लिए आए या सुधार कर रखे गए होते हैं। उन्हें इंजन के साथ जोड़ कर पटरियों पर दौड़ा तो दिया जाता है, मगर इस बात का गंभीरता से ध्यान नहीं रखा जाता कि आखिर वे लंबी दूरी का सफर तय करने के लिए सुरक्षित हैं भी या नहीं। फिर, अनेक बार घोषणाओं के बावजूद अभी तक रेल गाड़ियों और उनके डिब्बों को किसी केंद्रीकृत सुरक्षा प्रणाली से जोड़ने में कामयाबी नहीं मिल पाई है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

निगरानी तंत्र...

यह विडंबना ही रही है कि किसी अपराध के दोषी को जेल में सजा काटने के लिए भेजा जाता है, लेकिन वहां वह कई ऐसी सुविधाएं हासिल कर लेता है, जो गैरकानूनी होती हैं। यानी बाहर कानून को ताक पर रख कर वह किसी अपराध को अंजाम देता है और इसके बदले जब उसे सजा दी जाती है, तो वह जेल में भी वक्त काटने के लिए गैरकानूनी रास्ता ही अख्तियार करता है। इसे लेकर लंबे समय से सवाल उठते रहे हैं कि कानून को धता बता कर जेल में बंद किसी कैदी को नियमों के खिलाफ मोबाइल फोन या टीवी जैसी अन्य सुविधाएं कैसे मिल जाती हैं और उसके लिए कौन जिम्मेदार है। आखिर जेल के भीतर किसी कैदी के पास अलग से निजी फोन या अन्य साधन पहुंचते कैसे हैं? जाहिर है, जेल की सुरक्षा व्यवस्था के लिए तैनात तंत्र में किसी स्तर पर या तो चूक होती है या फिर किसी कर्मचारी की मिलीभगत, जिसकी वजह से कैदी के पास फोन पहुंचा दिया जाता है। यह स्थिति एक तरह से सुरक्षित चारदिवारी मानी जाने वाली जेलों के निगरानी तंत्र पर सवालिया निशान है। अब केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इस मसले से निपटने के लिए जेल कानून का एक नया मसविदा तैयार किया है, जिसमें कैदियों पर निगरानी के लिए प्रमुख रूप से तकनीक के इस्तेमाल पर जोर दिया गया है। इस क्रम में एक अहम सुझाव यह है कि अगर किसी कैदी के पास मोबाइल फोन पाया जाता है तो उसे तीन साल के कारावास की सजा दी जाएगी। जेलों में अपराधियों के बीच हिंसक टकराव की अनेक घटनाओं को देखते हुए मसविदे में विभिन्न अपराध के कुछ दोषियों को उनकी प्रकृति और जोखिम के मुताबिक अलग-अलग रखने की बात भी कही गई है। प्रतिबंधित वस्तुओं की तलाश में कैदी की नियमित तलाशी ली जाएगी। एक प्रावधान यह है कि किसी सजायाफ्ता कैदी को ''इलेक्ट्रानिक ट्रैकिंग'' उपकरण पहनने की शर्त पर छुट्टी पर बाहर भेजा जा सकता है, ताकि उसकी आवाजाही और अन्य गतिविधियों पर नजर रखी जा सके। इसमें नियमों के उल्लंघन पर भविष्य में छुट्टी के अयोग्य घोषित किया जाना और छुट्टी रद्द किया जाना भी शामिल है। देश की जेलों में बंद कैदियों के मोबाइल फोन या अन्य उपकरणों का इस्तेमाल करने से लेकर अन्य गैरकानूनी गतिविधियों के बारे में जैसी खबरें आती रही हैं, उसके मद्देनजर मंत्रालय के सुझाव महत्त्वपूर्ण हैं। कहने को जेल में प्रवेश से लेकर बाहर निकलने तक पर सख्त निगरानी होती है। मगर ऐसे मामले अक्सर सामने आते रहे हैं, जिसमें किसी कैदी के पास से फोन या अन्य सामान जब्त किए गए। फिर जेल में बंद होने के बावजूद किसी कैदी के बाहर गिरोह या आपराधिक गतिविधियों को संचालित करने या उसे अंजाम देने की घटनाएं भी अक्सर चिंता की वजह बनती रही हैं। आधुनिक तकनीकी तक सजायाफ्ता अपराधियों की पहुंच ने भी कानूनों को ताक पर रखने के मामलों में इजाफा किया है। जेलों के घोषित सुरक्षा तंत्र के बरक्स यह जेलकर्मियों की मिलीभगत के जरिए और अधिकारियों की अनदेखी की वजह से ही संभव हो पाता होगा कि किसी सजायाफ्ता कैदी के पास मोबाइल, अन्य उपकरण या सुविधा के साधन पहुंच जाते हैं। इसमें अपराधियों के प्रभावशाली लोगों से जुड़े तार और उनके रसूख की भी भूमिका होती है। ऐसी स्थिति में जेलों के भीतर गैरकानूनी गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए कानूनी स्तर पर सख्ती जरूर बरती जाए, लेकिन अगर उनके अमल को लेकर कोताही होगी, जेलों के अपने तंत्र को ईमानदार और दुरुस्त नहीं बनाया जाएगा तो नियम-कायदों की अहमियत सिर्फ कागजों में सिमटी रहेगी।

काठमांडू के सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष सेठी का जयपुर में हुआ भव्य स्वागत

जयपुर. शाबाश इंडिया

धर्म नगरी जयपुर के दिल्ली रोड़ पर स्थित खोले के हनुमान जी के मंदिर में नेपाल काठमांडू से आए सामूहिक जिनेन्द्र आराधना संस्था नेपाल शाखा के अध्यक्ष और अंतराष्ट्रीय समरसता मंच के सलाहकार बोर्ड सदस्य सुभाष जैन सेठी और परिवारजनों का मंदिर जी प्रबंध समिति के मंत्री और वरिष्ठ पत्रकार, दैनिक सांध्य ज्योति के प्रबंध संपादक बी एम शर्मा ने भावभीना स्वागत किया। इस अवसर पर सुभाष सेठी ने खोले के हनुमान जी परिसर में दर्शन पाठ किया और अवलोकन करके, वहा की भव्यता की खूब तारीफ करते हुए, बी एम शर्मा एवम कमेटी का आभार प्रकट किया, साथ ही वहा हुए विशाल अन्नकूट में हिस्सा लिया।

ज्ञान की आरधना और साधना का महापर्व है, ज्ञान पंचमी : महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई। ज्ञान की आरधना का महापर्व है ज्ञान पंचमी।शनिवार को साहुकार पेट भवन में महासती धर्मप्रभा ने ज्ञान पंचमी पर आयोजित धर्मसभा में श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि ज्ञान आत्मा का श्रंगार है और जीवन यापन का साधन है बिना ज्ञान के मनुष्य न धन कमा सकता है और नाहि संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकता है ज्ञान के बिना जीवन शून्य है। संसार में ज्ञान ही एक मात्र तरिका है जिससे मनुष्य धन प्राप्त कर सकता है और आत्मा को मुक्ति, इस संसार में सबसे पवित्र और मूल्यवान कौई वस्तू है तो वह ज्ञान जिसे कौई चुरा नहीं सकता है ज्ञान को जितना मनुष्य बांटेगा उतना ही उसका ज्ञान बढ़ेगा, घटने वाला नहीं है। अपनी आत्मा को जानना है तो ज्ञान से ही वो जान सकता है बिना ज्ञान के उसे न परमात्मा मिलने वाले हैं और ना ही वह धन कमा सकता है। मनुष्य अपने ज्ञान का जितना सदुपयोग करेगा उतनी ही जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकता है। और अपने ज्ञान को बढ़ा सकता है।

रोटरी क्लब जयपुर ने अभिनेत्री राधिका मेहरोत्रा को किया सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया। रोटरी क्लब जयपुर के द्वारा रोटरी भवन में शुक्रवार 17 नवंबर को दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्ष रोटे उजास चंद जैन ने कालापानी नेटफ्लिक्स वेब सीरीज की अभिनेत्री राधिका मेहरोत्रा एवं परिवारजन का रोटरी दुपट्टा पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। अध्यक्ष नॉमिनी रोटे सीए दुर्गेश पुरोहित ने बताया कि राधिका मेहरोत्रा के पिताजी फिल्मों के बहुत बड़े प्रशंसक रहे हैं और बचपन से ही उन्होंने राधिका जी को फिल्मों के लिए प्रेरित किया। डायरेक्टर रोटे शिल्पा बेंद्रे ने राधिका का परिचय दिया,राधिका मेहरोत्रा ने मोना सिंह और आशुतोष गोवारिकर के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा कि मैं बहुत खुश और आभारी हूं कि मुझे कालापानी फिल्म में उनके साथ काम करने का मौका मिला। मोना संग काम करना बहुत मजेदार रहा और यह कहने की जरूरत नहीं है कि वह शानदार है। आशुतोष सर सबसे अच्छे हैं, मैंने उनके साथ शूटिंग करके बहुत अच्छा समय बिताया। राधिका ने अपनी जीवन के सफर को साझा करते हुए रोटेरियनस के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। प्रोग्राम में रोटे सागर बेंद्रे के द्वारा ईश वंदना, रोटे सोनाली बेंद्रे के द्वारा शानदार रंगोली,चार्या टाक के द्वारा डांस प्रस्तुति,आन्वी धारीवाल के द्वारा वायलेन प्रस्तुति,कपल गेम एवं अन्य रोचक खेल भी शामिल रहे। बड़ी संख्या में रोटरी क्लब के सदस्यों व उनके परिवार जनों ने आयोजन का आनंद लिया। अंत में सचिव पियूष जैन ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

अपनी दूरदृष्टिता के साथ 2030 तक विकास की एक महत्वपूर्ण यात्रा के लिए तैयार भारत

अतुल मलिकराम (लेखक और राजनीतिक रणनीतिकार)

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत की हालिया उपलब्धियाँ बेहद शानदार रही हैं। देश ने सिर्फ एक महीने में ही अंतरिक्ष में गोते लगाने के साथ-साथ आर्थिक कूटनीति, तकनीकी शक्ति और अपनी वैश्विक पहुँच स्थापित करने में, एक माइलस्टोन स्थापित किया है। लेकिन जिस तरह हम भविष्य की तरफ देखते हैं, और 2030 तक एक समावेशी विकास की परिकल्पना करते हैं, उस हिसाब से, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि देश सिर्फ आर्थिक विकास के मामले में ही नहीं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने के लिए भी तैयार है। यदि हम पिछले लम्बे समय से जारी भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ हालिया कारनामों को देखें, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारा देश 21वीं सदी में ग्लोबल लीडर बनने की दिशा में तेजी से प्रगति कर रहा है।

अज्ञात की खोज और अंतरिक्ष में तिरंगा

भारत की चांद पर सफल लैंडिंग ने इसे अंतरिक्ष यात्रा करने वाले देशों के एक विशिष्ट क्लब में शामिल कर दिया है। सरकारी और निजी दोनों संस्थाओं द्वारा हासिल की गई यह ऐतिहासिक उपलब्धि, ब्रह्मांड की खोज के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान उतारने वाले चौथे देश के रूप में, भारत ने अंतरिक्ष अन्वेषण हेवीवेट के रूप में खुद को साबित किया है। बेशक चांद से कहीं आगे जाने की सोच के साथ, भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम ह्यूमन नॉलेज और टेक्नोलॉजी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

कूटनीति और वैश्विक उपस्थिति

जी-20 कार्यक्रम की मेजबानी करना भारत के लिए एक राजनयिक तख्तापलट की तरह था। दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने भारत को अपनी आर्थिक और तकनीकी ताकत दिखाने का मौका दिया। यह सम्मलेन न सिर्फ विश्व मंच पर देश के बढ़ते दबदबे को दर्शाने में सफल रहा, बल्कि जलवायु परिवर्तन और आर्थिक असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने की हमारी प्रतिबद्धता जाहिर करने में भी सुयोग्य साबित हुआ। इसे देखते हुए आने वाले वर्षों में वैश्विक एजेंडे को आकार देने के मामले में भारत की भूमिका मजबूत के होने के प्रबल आसार हैं।

टेक्नोलॉजी और मैन्युफैक्चरिंग के साथ 'मेक इन इंडिया' क्रांति

'मेड-इन-इंडिया' यानि भारत में बने IPhone 15 का लॉन्च होना, हाई-एंड इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग में भारत की क्षमताओं को उजागर करता है। इसे महज एक इंडस्ट्रियल उपलब्धि से कहीं अधिक समझा जाना चाहिए, क्योंकि यह देश के ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग सेंटर के रूप में परिवर्तित होने का प्रतीक भी है। जैसे-जैसे भारत अपनी मैन्युफैक्चरिंग क्षमताओं में विविधता ला रहा है, यह इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर ऑटोमोबाइल तक विभिन्न उद्योगों में एक प्रमुख प्लेयर बनने की ओर कदम बढ़ा रहा है, जो जाहिर तौर पर 'मेक इन इंडिया' पहल को और बढ़ावा देने का काम करेगा।

सभी क्षेत्रों में अलग-अलग उपलब्धियाँ

अंतरिक्ष और टेक्नोलॉजी से परे, भारत की उपलब्धियाँ कई क्षेत्रों में फैली हुई हैं। अंडर-19 टी20 विश्व कप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की जीत से लेकर ऑस्कर विजेता फिल्म 'आरआरआर' और इन्फोसिस के बाजार पूँजीकरण में 100 अरब डॉलर से अधिक होने वाली पहली भारतीय कंपनी के रूप में उभरने तक अलग-अलग माइलस्टोंस के साथ खेल, मनोरंजन और आईटी में भारत की शक्ति किसी विवाद का पात्र नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में भारत की यह बहुमुखी उत्कृष्टता, भारत के विशाल टैलेंट पूल और लगभग सभी क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हासिल करने की बेमिसाल क्षमता को उजागर करती है।

आने वाले कल की आर्थिक महाशक्ति

भारत की आर्थिक वृद्धि कोई तत्काल हुई घटना नहीं है, यह एक अच्छी तरह स्थापित ट्रेंड के कारण है। फिलहाल दुनिया की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के तौर पर भारत के 2030 तक तीसरे पायदान पर पहुँचने का अनुमान है। यह आर्थिक विस्तार, गेंहू-चावल के शीर्ष उत्पादक, आईटी सर्विसेस में सबसे आगे, एक संपन्न स्टार्टअप इकोसिस्टम और इसकी भूमिका के साथ जुड़ा हुआ है। सबसे तेजी से बढ़ता एविएशन और टूरिज्म मार्केट, भारत को एक मजबूत प्रक्षेप पथ के साथ एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है।

भारत की तेज गति से होती वृद्धि के पीछे कई कारक हैं:

एक युवा और बढ़ती जनसंख्या: भारत की युवा आबादी, एक विशाल कार्यबल और एक बढ़ते उपभोक्ता बाजार को दर्शाती है।

तेजी से शहरीकरण: शहरीकरण भारत के शहरों को बदल रहा है, और इनोवेशन को बढ़ावा देने के साथ-साथ आर्थिक विकास को गति प्रदान कर रहा है।

बढ़ता मिडिल क्लास: विकसित होता मिडिल क्लास, कंज्यूमर गुड्स और सर्विसेस की डिमांड को तेजी से बढ़ा रहा है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम: भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम उद्यमिता को बढ़ावा दे रहा है, इससे रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं और इनोवेशन को बढ़ावा मिल रहा है।

इनोवेशन और टेक्नोलॉजी: भारत का इनोवेशन और टेक्नोलॉजी पर ध्यान इसे वैश्विक तकनीकी पहलु पर आगे बढ़ा रहा है।

सरकारी पहल: विकास की उत्प्रेरक भारत सरकार विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सुधार: हाल के सुधारों ने कारोबारी माहौल को आसान बनाने के साथ-साथ विदेशी निवेश को आकर्षित किया है और व्यापार करने के तरीकों को आसान बना दिया है।

इंफ्रास्ट्रक्चर: इंफ्रास्ट्रक्चर में महत्वपूर्ण निवेश कनेक्टिविटी, लॉजिस्टिक्स और व्यापार दक्षता को बढ़ा रहे हैं।

एजुकेशन: एजुकेशन में निवेश, कुशल कार्यबल को बढ़ावा दे रहा है, जो विकास को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

वर्ष 2030 तक भारत की यात्रा उपलब्धियों और महत्वाकांक्षी प्रयासों की एक प्रभावशाली श्रृंखला को चिन्हित करती है। अंतरिक्ष की खोज से लेकर आर्थिक ताकत तक, तकनीकी कौशल से लेकर सांस्कृतिक योगदान तक, तेजी से आगे बढ़ता भारत का उसके लचीलेपन, इनोवेशन और वैश्विक दृष्टिकोण का प्रमाण है। इस रास्ते पर आगे बढ़ते हुए, भारत न सिर्फ एक ग्लोबल लीडर के रूप में अपनी जगह सुरक्षित करने के लिए तैयार है, बल्कि सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य की शुरूआत करते हुए, दुनिया की सबसे गंभीर चुनौतियों का समाधान करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए पहली सफ में खड़ा है। दुनिया आशा भरी नजरों से देख रही है कि भारत की उल्लेखनीय विकास गाथा किस तरह सामने आ रही है।

25 नवम्बर 2023

आपका मताधिकार

राजस्थान

को देगा सशक्त आधार

प्रदेश के खुशहाल भविष्य
के लिए मतदान अवश्य करें।

निवेदक: शाबाश इंडिया दैनिक ई-पेपर

अहिंसा फेस्टिवल : 2023 का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान जन मंच ट्रस्ट पक्षी चिकित्सालय द्वारा प्राक्रतिक चिकित्साल बापू नगर में जयपुर अहिंसा फेस्टिवल 2023 का आयोजन किया गया। समारोह में अहिंसा सेवा से जुड़ी प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। व्यक्तित्व विकास, श्रेष्ठ साहित्य, एनिमल केयर, अहिंसक चिकितसव,की सेवा मानव स्वास्थ्य, आदि की स्टाल्स लगाई। पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा, शाकाहार वाइल्ड लाइफ, पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। समारोह में शामिल पद्मश्री डाक्टर डी आर मेहता, चिकित्सालय के अध्यक्ष आई सी अग्रवाल, सचिव कुल भूषण बैराठी, सामाजिक कार्यकर्ता व प्रेस रिपोर्टर सुरेन्द्र जैन बड़जात्या ने कि रसोई में पहली दो रोटी जानवरो के लिए बनाए ताकि जानवर भूखा नही रहे और किसी अन्य जीव को हिंसा का शिकार न बनाए, सभी चिकित्सक, वैज्ञानिकों, समाज सेवियों ने पशु, पक्षी, अहिंसा शाकाहार पर सम्बोधित किया। संस्थान के अध्यक्ष कमल लोचन ने यह जानकारी दी ।

इंटर्नशिप को सभी विद्यार्थियों ने बताया सार्थक

जोधपुर

पांच दिवसीय इंटर्नशिप में AU SMALL FINANCE BANK- बालेसर द्वारा उपलब्ध करवाई गई सभी जानकारियों को विद्यार्थियों ने अपने जीवन में अमल करने के लिए जोर दिया और इस प्रयास को काफी सार्थक बताया ।पुनीत भटनागर एवं प्रदीप उपाध्याय एकेडमिक मेंटर भारती फाउंडेशन ने बताया कि नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि बैंकिंग संस्थान के प्रोसेस के बारे में व्यवहारिक ज्ञान मिलने पर और बैंकिंग के संबंधित सभी क्रियाकलापों जोकि बचत खाता, चालू खाता, मनी ट्रांसफर, ऑनलाइन पेमेंट, एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, फिक्स्ड डिपॉजिट, म्युचुअल फंड, जीवन बीमा एवं जनरल बीमा इत्यादि से परिचित होने का अवसर मिला जो कि उनको अपने जीवन में आगे बढ़ने में काफी सक्षम साबित होगा। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुई जोधा, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रतन सिंह की ढाणी, सेखाला ब्लॉक के 16 विद्यार्थी ने बताया कि भारती फाउंडेशन द्वारा हम सभी को यह अवसर मिलता रहता है जिससे कि हम अपनी जिम्मेदारियों को समझें और हमारे टैलेंट को निखारने में सहायता मिलती है ।AU SMALL FINANCE BANK के शाखा प्रबंधक वैभव टिक्कू, रामदान, हेमंत ने अपने संस्थान के प्रोसेस के बारे में काफी विस्तृत तौर पर इन सभी विद्यार्थियों को जानकारी उपलब्ध करवाई। प्रदीप उपाध्याय, एकेडमिक मेंटर, भारती फाउंडेशन ने AU SMALL FINANCE BANK के सभी स्टाफ का आभार व्यक्त किया। उपरोक्त विद्यालय भारती फाउंडेशन के सत्य भारती क्वालिटी सपोर्ट कार्यक्रम के अंतर्गत समर्थित हैं, जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है।

गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने कहा...

जैन तीर्थों की रक्षा का करें प्रयास

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी जिला टोंक (राज.) में विराजमान प. पू. भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी अपने मंगल उपदेशों के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को धर्म से जोडने का प्रयास कर रही हैं ।पूज्य माताजी का मुख्य लक्ष्य यह है कि जैन तीर्थों का संरक्षण हो जो हमारी प्राचीन संस्कृति , धरोहर है उनकी कायमता सदा बनी रहे।इस हेतु पूज्य माताजी ने सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर एक प्राचीन जिनबिम्ब केन्द्र की स्थापना का प्रस्ताव रखा है जिससे प्राचीन मूर्तियों का उचित रख - रखाव किया जा सके। पूज्य माताजी ने कहा कि तीर्थ हमारे प्राण हैं। इनसे हमें सकरात्मक ऊर्जा की प्राप्ति होती है। जैन धर्म अनादिकाल से चला आ रहा है। जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है जो उस दर्शन में निहित है जो सभी जीवित प्राणियों को अनुशासित, अहिंसा के माध्यम से मुक्ति का मार्ग एवं आध्यात्मिक शुद्धता और आत्मज्ञान का मार्ग सिखाता है। आज वर्तमान युग में सरकार , शासन द्वारा सबसे अधिक संकट में डाले जा रहे हैं तो वो है हमारे जैन तीर्थ ।गिरनार जी, शिखर जी जैसे तीर्थों को बचाने के लिए हमें एक सूत्र में बंधकर एकता का परिचय देना होगा । ताकि हमारे तीर्थ को बचाया जा सके। आगामी 10 दिसम्बर 2023 को माताजी ससंघ के पिच्छिका परिवर्तन एवं 108 फीट उत्तुंग कलशाकार सहस्त्रकूट जिनालय की भूमि शुद्धि का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

प्रेम के याचक

हम सदा जीवन-तिमिर में दु:ख के ही वाचक रहे,
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे।।

एक मूरत के चरण का पुष्प हर कुम्हला गया
कर्म हम वह कर न पाए फूल हो जिससे नया
पुण्य ही करते रहें पर पाप सारे बढ़ गये
पुष्प पाने को डगर में कंटकों को गढ़ गये
पुण्य करके भी सदा हम कर्म से पातक रहे
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे।।

दीर्घ जीवन,अल्प जीवन का न कोई मोल है
दो पलों का प्रेम पाया जन्म वह अनमोल है
एक जल धारा में बहती वस्तु के जैसे कहीं
है हमारा स्थान सच में देखिए तो अब वहीं
स्वाति की बूंदें गिरी पर हम कहाँ चातक रहे।
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे।।

मृत्यु आने तक भी जीवन अब कहाँ आसान है
तन तो केवल भूमि पर निर्जीव-सा सामान है
साधनों की चाह में ही हम असाधारण हुये
लोभ लालच की तपन में हम सभी चारण हुये
हम स्वयं ही या स्वयं के साथ ही घातक हुये।
बाँटते सुख रह गये पर प्रेम के याचक रहे।।

@डॉ. अनुराग
डा.अनुराग सिंह नगपुरे,
टीबी टोली गोंदिया (महाराष्ट्र)

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का विश्वशांति की कामना के साथ हुआ समापन

विश्वशांति महायज्ञ तथा विशाल शोभायात्रा का हुआ आयोजन, शोभायात्रा में उमड़े श्रद्धालु

अर्पित जैन. शाबाश इंडिया

भैंसलाना। कस्बे के श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का समापन शनिवार को हर्षोल्लास के साथ हुआ।आयोजक अमित जैन ने बताया की सुबह श्रीजी का अभिषेक,शांतिधारा की गई जिसके बाद पंडित प्रमोद जैन शास्त्री के सानिध्य में विधान पूजन और विश्वशांति महायज्ञ किया गया। इस दौरान इंद्र इंद्राणीयों ने भक्तिभाव से विधान पूजन किया। वहीं विश्वशांति महायज्ञ में पूणार्हुति देकर विश्व शांति की कामना के साथ चार दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का समापन हुआ। शाम को श्रीजी को पालकी में नगर भ्रमण करवाया गया। इस दौरान सैकडो की संख्या में जुलूस के साथ जैन समाज के श्रावक पदमप्रभु भगवान के जयकारे लगाते हुए शामिल हुए। जुलूस मंदिर से रवाना होकर आजाद चौक,मैंन बाजार, कुम्हारों का मोहल्ला होते हुए वापस जैन मंदिर पहुंच समाप्त हुआ। इस दौरान घीसालाल पाटनी,सुमेरचंद जैन,महावीर प्रसाद,नवरतन जैन,कैलाशचंद पाटनी,राजकुमार पाटनी,दिलीप पाटनी, विनोद कुमार,ललित पाटनी,सुशील जैन,मनोज जैन,सोनू पाटनी नावां,अजय जैन,अरिहंत पाटनी आदि मौजूद रहे।

22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का गर्भ कल्याणक मनाया जोर-शोर से

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे के श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर, पारसनाथ जैन मंदिर, चंद्रप्रभु नसिया तथा कस्बे के सभी जिनालयों सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लदाना के जिनालयों में आज जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ का गर्भ कल्याणक भक्ति भाव के साथ जोर शोर से मनाया गया। जैन महासभा के प्रतिनिधि राजा बाबू गोधा ने मीडिया को अवगत कराया कि इससे पूर्व सभी जिनालयों में अभिषेक, शांतिधारा एवं अष्टद्रव्यों से पूजा हुई, तथा पूजा के दौरान जन्म कल्याणक महोत्सव का अर्घ्य चढ़ाया गया, उक्त कार्यक्रम में फागी समाज के वयोवृद्ध कपूरचंद जैन , मोहनलाल झंडा, सोहनलाल झंडा,अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, केलास कासलीवाल पं.संतोष बजाज, हरकचंद झंडा, महावीर बजाज,महावीर मोदी,राजेंद्र मोदी,पदम बजाज, सौभागमल सिंघल, मोहनलाल सिंघल,माणक कासलीवाल, कमलेश चोधरी, कमल झंडा, कमलेश झंडा, पवन मोदी,त्रिलोक जैन पीपलू वाले तथा राजाबाबू गोधा सहित समाज के काफी श्रावक श्राविकाऐं मौजूद थे।

राजस्थान की महान नारियों पर आधारित नाटक राजपुताना का मंचन

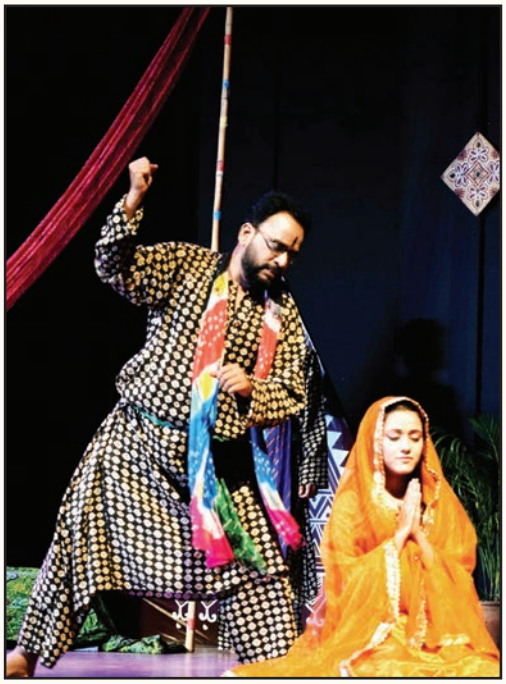

जयपुर. शाबाश इंडिया

इंफोसिस फाउंडेशन और भारतीय विद्या भवन के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे धरती धौरा री कार्यक्रम के तीसरे दिन महाराणा प्रताप सभागार से वरिष्ठ रंगकर्मी तपन भट्ट द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक राजपुताना का मंचन किया गया। इस नाट्य प्रस्तुति में राजस्थान की चार महान नारियाँ मीरा, हाड़ी रानी, पन्ना धाय और रानी पद्मिनी की गाथा दशार्यी गयी । गौरतलब है कि तपन भट्ट की इस चर्चित नाट्य कृति का मंचन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के भारत रंग महोत्सव सहित अनेक फेस्टिवल्स में हो चुका है। नाटक राजपुताना ये कहता है कि नारी नवरस का भंडार है उसे चिंगारी बनने पर मजबूर मत करो। राजस्थान युगों युगों से वीरों की भूमि रहा है । राजस्थान की भूमि ने हमेशा वीरों और वीरांगनाओं को जन्म दिया है । राजस्थान की नारी, या यूं कहें कि राजपुताना की नारी, हमेशा गरिमामयी और गवीर्ली रही है । वो नवरसों का भण्डार है किन्तु आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम नारी और उसकी अस्मिता को वो स्थान नहीं दे पाये हैं जो उसे मिलना चाहिये । राजस्थान की धरती पर बलिदान और त्याग को सार्थक करती कई नारियों ने जन्म लिया है, तो वहीं वीरता और प्रेम से सराबोर महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया है । राजस्थान की नारी के इसी अद्भुत रूप को दशार्ते नाटक राजपुताना का लेखन और निर्देशन प्रसिद्ध रंगकर्मी तपन भट्ट ने किया । नाटक राजपुताना कहता है कि नारी से उसके ये नवरस छीन कर हम उसे रसहीन बना रहे हैं । नारी को उसकी अस्मिता से दूर कर हम उसे चिंगारी बनने पर मजबूर कर रहे हैं।

नाटक का कथानक

रसों के राजा रसराज के पास पांच स्वर जो पंच तत्वों के प्रतीक है रस की तलाश में आते हैं । रसराज उन्हें राजस्थान की भूमि पर भेजते हैं और कहते हैं कि राजपुताना कि नारी अपने आप रसों का भण्डार है उसमे श्रृंगार है, करुणा है, प्रेम है, वीरता है, वो अद्भुत है । किन्तु जब वो यहाँ आते है तो उन्हें यहाँ डरी सहमी नारी मिलती है जो समाज द्वारा शोषित है । वो नारी को उसका अतीत याद दिलाते है और बताते है कि ये नारी कभी मीरा कि तरह भक्ति और श्रृंगार कि मूरत थी, कभी हाड़ी की तरह आदमी साहसी और वीर थी, पन्नाधाय की तरह अद्भुत बलिदानी थी और पद्मिनी की तरह साहसी और शौर्य का प्रतीक थी । नारी को अपना अतीत याद आता है और नारी उसका शोषण करने वालों को चेतावनी देती है और कहती है कि क्या नारी का अस्तित्व चिंगारी बनकर ही जिन्दा रहेगा, अगर वो चिंगारी नहीं तो क्या नारी नहीं । नारी को मीरा बनाओ हाड़ी बनाओ पन्ना बनाओ पद्मिनी बनाओ । नारी को चिंगारी बनने पर मजबूर मत करो यदि वो चिंगारी बन गयी तो सब कुछ खाक कर देगी ।

विशेष: लगभग डेढ़ घंटे की इस प्रस्तुति में राजस्थान कि चार महान नारियों की तखाये दिखाई गयी पर खास बात ये रही कि नाटक में एक भी फेड आउट नहीं था दृश्य परिवर्तन के लिए संगीत और कपड़ो का सहारा लिया गया। बड़े बड़े राजस्थानी साफे और साड़ियों से महल, मंदिर आदि बनाये गए और चुन्नियो से बनाए गए थाल में हाडी रानी का कटा सर दिखाया गया जो आकर्षण का केंद्र रहा। **कलाकार:** नाटक में विशाल भट्ट, अभिषेक झाँकल, अजय जैन मोहनबाड़ी, रिमझिम भट्ट, अन्नपूर्णा शर्मा , झिलमिल भट्ट, शाहरुख खान, कमलेश चंदानी, रोशन चौधरी, साहिब मेहंदीरत, दीपक जांगिड़, अनुज और स्वयं तपन भट्ट ने भाग लिया। नाटक का मजबूत पक्ष था इसका संगीत जिसे तैयार किया सौरभ भट्ट, शैलेंद्र शर्मा एवं अनुज भट्ट ने। प्रकाश व्यवस्था शहजोर अली की एवं रूप सज्जा रवि बांका की थी। **तपन भट्ट: लेखक एवं निर्देशक**

भैंसलाना में खटीक समाज द्वारा कांग्रेस प्रत्याक्षी विद्याधर चौधरी का किया स्वागत

भैंसलाना. शाबाश इंडिया। कस्बे के खटीक समाज के द्वारा कांग्रेस प्रत्याशी विद्याधर चौधरी का स्वागत कर लड्डुओ से तोला गया। पूर्व कांग्रेस जिला सचिव राजू दायमा ने बताया की शनिवार को चुनावी जनसंपर्क कर रहे कांग्रेस से फुलेरा विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याक्षी विद्याधर चौधरी का भैसलाना के खटीक समाज द्वारा खटीक धर्मशाला के प्रांगण मे लड्डुओ से तोल कर जोरदार स्वागत किया गया इस दौरान जगह जगह समाज द्वारा साफा बंधवाकर स्वागत किया गया। इस दौरान लादूराम सांखला, भैरूराम दायमा, पूर्व सरपंच द्वारकाप्रसाद पुजारी देवाराम सांखला, गुलाब सांखला, जगदीश सांखला, गजानंद सांखला, मालचंद सांखला, जगदीश सांखला, राजू सांखला, परसराम सांखला, संतोष सांखला, गणपत सांखला, चित्रमल सांखला उप सरपंच गीतादेवी आदि मौजूद रहें।